NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 03-02-2026

विषय सूची

भारत को एक वैश्विक जैव-औषधि (बायोफार्मा) केंद्र में रूपांतरण

भारत–अमेरिका व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर

DAY NRLM: ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण का आगामी चरण

2026 दिल्ली घोषणा-पत्र

बजट 2026: सरकार द्वारा ऑरेंज अर्थव्यवस्था को समर्थन

संक्षिप्त समाचार

ज्ञान भारतम्

राष्ट्रीय एकीकरण परिषद

भारत–विस्तार(VISTAAR)

सेल्फॉस विषाक्तता

बॉन्ड यील्ड्स

गोबरधन योजना (GOBARdhan Scheme)

सामान्य सापेक्षता का सिद्धांत

भारत को एक वैश्विक जैव-औषधि (बायोफार्मा) केंद्र में रूपांतरण

संदर्भ

- संघीय बजट 2026–27 में *बायोफार्मा शक्ति* योजना का प्रस्ताव किया गया है, जिसके अंतर्गत पाँच वर्षों में ₹10,000 करोड़ का प्रावधान है। इसका उद्देश्य भारत के जैविक औषधि (Biologics) और जैव-समान औषधि (Biosimilars) उत्पादन के पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करना है।

बायोफार्मा

- बायोफार्मा अथवा जैव-औषधियाँ, औषधि उद्योग का वह भाग है जो जीवित जैविक प्रणालियों का उपयोग करके औषधियों के विकास और निर्माण पर केंद्रित है, न कि केवल रासायनिक संश्लेषण पर।
  - बायोफार्मा औषधियाँ जैविक जीवों जैसे मानव कोशिकाएँ, कवक या सूक्ष्मजीवों के माध्यम से निर्मित होती हैं।
- जैव-औषधियों के कुछ उदाहरण हैं: टीके, एंटीबॉडी उपचार, जीन थेरेपी, कोशिका प्रत्यारोपण, आधुनिक इंसुलिन और पुनः संयोजित प्रोटीन औषधियाँ।
- **सरकार का उद्देश्य:** भारत को अग्रणी वैश्विक बायोफार्मा उद्योग में रूपांतरित करना और वैश्विक जैव-औषधि बाजार में 5% हिस्सेदारी प्राप्त करना।

बायोफार्मा हेतु प्रमुख बजटीय घोषणाएँ

- **बायोफार्मा शक्ति:** यह पहल उच्च-मूल्य वाली जैव-औषधियों के घरेलू विकास और निर्माण को समर्थन देने तथा वैश्विक जैविक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए बनाई गई है।
- **राष्ट्रीय संस्थानों की स्थापना:** तीन नए *राष्ट्रीय औषधि शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (NIPERs)* की स्थापना और सात वर्तमान NIPERs का उन्नयन।
  - यह उपाय बायोफार्मा अनुसंधान, विकास, निर्माण और विनियमन में अत्यधिक विशेषज्ञ मानव संसाधन की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने हेतु है।
- **अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र का सुदृढ़ीकरण:** देशभर में 1,000 से अधिक मान्यता प्राप्त नैदानिक परीक्षण स्थलों के विकास का प्रस्ताव।
  - इससे जैविक औषधियों और जैव-समान औषधियों के उन्नत नैदानिक परीक्षण करने की भारत की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।
- **विनियामक ढाँचा:** *केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (CDSCO)* की क्षमता को विशेष वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मियों की नियुक्ति द्वारा बढ़ाना।
  - ध्यान विनियामक दक्षता सुधारने और अनुमोदन समयसीमा को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने पर है।

भारत का औषधि क्षेत्र

भारत के बायोफार्मा क्षेत्र को सुदृढ़ करने हेतु सरकारी पहलें

- **राष्ट्रीय बायोफार्मा मिशन (NBM):** *इननोवेट इन इंडिया(i3)* वर्ष 2017 में प्रारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य 2025 तक भारत को $100 अरब का अग्रणी वैश्विक जैव-प्रौद्योगिकी उद्योग बनाना है।
  - इसे विश्व बैंक द्वारा सह-वित्तपोषित किया गया है और *बायोटेक्नोलॉजी इंडस्ट्री रिसर्च असिस्टेंस काउंसिल (BIRAC)* द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है।

- मिशन का ध्यान नए टीकों, जैव-चिकित्सीय उत्पादों, निदान उपकरणों और चिकित्सा उपकरणों के विकास पर है।
- इसका उद्देश्य औषधियों को अधिक सुलभ और किफायती बनाना भी है।

- **BIRAC-नेतृत्व वाली जैव-नवाचार सहायता:** *BIRAC* की स्थापना 2012 में *जैव-प्रौद्योगिकी विभाग (DBT)* के अंतर्गत की गई थी। यह नवाचार को वित्तीय योजनाओं, इनक्यूबेशन अवसंरचना और परामर्श के माध्यम से समर्थन प्रदान करता है।
- **निर्माण एवं औद्योगिक सुदृढ़ीकरण उपाय:** सरकार ने *उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना*, *औषधि उद्योग सुदृढ़ीकरण (SPI) योजना* और *बल्क ड्रग पार्क योजना* जैसी योजनाएँ लागू की हैं।
- **फार्मा-मेडटेक में अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा (PRIP):** 2023 में प्रारंभ की गई *PRIP योजना* का उद्देश्य भारत को नवाचार-प्रेरित और वैश्विक प्रतिस्पर्धी फार्मा-मेडटेक क्षेत्र में रूपांतरित करना है।
- **BioE3 नीति:** *BioE3 (बायोटेक्नोलॉजी फॉर इकॉनमी, एनवायरनमेंट एंड एम्प्लॉयमेंट)* नीति 2024 में अनुमोदित की गई।
  - इसका उद्देश्य जैव-निर्माण, *बायो-AI* हब और *बायोफाउंड्री* स्थापित कर सतत *विकसित भारत* का निर्माण करना है।
- **Bio-RIDE योजना:** 2024 में प्रारंभ की गई *Bio-RIDE योजना* ने DBT की दो प्रमुख योजनाओं को एकीकृत किया।
  - इसमें नया घटक *जैव-निर्माण और बायोफाउंड्री* जोड़ा गया।
  - योजना के तीन प्रमुख घटक हैं:
    - जैव-प्रौद्योगिकी अनुसंधान एवं विकास (R&D)
    - औद्योगिक एवं उद्यमिता विकास (I&ED)
    - जैव-निर्माण और *बायोफाउंड्री*

निष्कर्ष

- इन सभी उपायों से यह संकेत मिलता है कि सरकार भारत में एक सुदृढ़ बायोफार्मा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए अनुसंधान, नवाचार, निर्माण और उद्यमिता को समाविष्ट करते हुए एक सुनियोजित एवं समन्वित नीतिगत दृष्टिकोण अपना रही है।
- संघीय बजट 2026–27 में घोषित *बायोफार्मा शक्ति* योजना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण नीतिगत हस्तक्षेप का प्रतिनिधित्व करती है।

स्रोत: PIB

भारत–अमेरिका व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर

समाचारों में

- भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने एक नए व्यापार समझौते की घोषणा की है, जिसके अंतर्गत शुल्कों में कमी की गई है और द्विपक्षीय व्यापार के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।
  - अगस्त 2025 में, अमेरिका ने भारत के रूसी तेल आयात से जुड़े शुल्क लगाए थे, जो 50% तक (25% पारस्परिक + 25% अतिरिक्त शुल्क) थे।

भारत–अमेरिका व्यापार समझौते के बारे में

- **शुल्क में कमी:** भारतीय वस्तुओं पर अमेरिका के पारस्परिक शुल्क 25% से घटाकर 18% कर दिए गए हैं, जो तत्काल प्रभाव से लागू होंगे।
  - पहले लगाए गए अतिरिक्त 25% शुल्क को वापस ले लिया गया है।
- **अमेरिका के व्यापक दावे:** अमेरिका का कहना है कि इस समझौते में अमेरिकी वस्तुओं पर शून्य शुल्क और गैर-शुल्कीय बाधाओं को शामिल किया गया है तथा भारत ने ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, कृषि, कोयला आदि क्षेत्रों में $500 अरब से अधिक मूल्य की अमेरिकी वस्तुएँ खरीदने का वचन दिया है।
  - भारत अमेरिकी वस्तुओं पर शुल्क और गैर-शुल्कीय बाधाओं को क्रमिक रूप से कम करेगा।

समझौते का महत्व

- यह वैश्विक भू-राजनीतिक परिवर्तनों के बीच भारत–अमेरिका संबंधों को सुदृढ़ करता है, विशेषकर चीन के संदर्भ में।
  - वैश्विक व्यापार और विनिर्माण में चीन के प्रभुत्व का सामना करने में सहायक होगा।
- कम शुल्क भारतीय निर्यातकों (किसान, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, उद्यमी) की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ा सकते हैं और निवेश आकर्षित कर सकते हैं।
  - यह *मेक, डिज़ाइन एंड इनोवेट इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड* पहल को समर्थन देगा।
- तेल आयात में विविधता लाने से भारत की रूस पर निर्भरता कम हो सकती है, यद्यपि लागत अधिक होगी।
- वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता के बीच यह रुपये को स्थिर करने में सहायक होगा।
- यह भारत को अमेरिका-नेतृत्व वाले व्यापार और सुरक्षा ढाँचों में एक प्रमुख भागीदार के रूप में स्थापित करेगा।

चुनौतियाँ

- भारत को व्यापार और ऊर्जा क्षेत्र में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:
  - घरेलू विरोध अमेरिकी आयात के लिए कृषि बाजार खोलने को सीमित करता है।
  - रियायती रूसी कच्चे तेल को रोकना ऊर्जा लागत बढ़ाएगा और रिफाइनरियों पर दबाव डालेगा।
  - अमेरिकी H-1B वीज़ा शुल्क में वृद्धि भारतीय आईटी पेशेवरों को बाधित करती है, जबकि सेवाओं से संबंधित मुद्दे व्यापार समझौतों में संबोधित नहीं किए गए हैं।
- इसके अतिरिक्त, ईरान व्यापार पर अमेरिकी शुल्क की धमकियों ने भारत को व्यापार घटाने और चाबहार बंदरगाह निवेश रोकने के लिए विवश किया है।

भारत–अमेरिका व्यापार के बारे में

- अमेरिका भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक है। भारत का अमेरिका के साथ व्यापार अधिशेष है, जो मुख्यतः सेवाओं और उच्च-मूल्य निर्यातों के कारण है।
- भारत–अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार FY24 में US$ 119.71 अरब से बढ़कर FY25 में रिकॉर्ड US$ 132.2 अरब तक पहुँच गया, जो आर्थिक संबंधों की सुदृढ़ता को दर्शाता है।
- अमेरिका भारत में तीसरा सबसे बड़ा निवेशक है। वर्ष 2000–2025 के बीच संचयी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) US$ 70.65 अरब रहा है।
- अमेरिका को भारत के प्रमुख निर्यातों में औषधियाँ, अभियांत्रिकी वस्तुएँ, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा रत्न एवं आभूषण शामिल हैं।

स्रोत :TH

DAY NRLM: ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण का आगामी चरण

संदर्भ

दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY NRLM) एक नए चरण में प्रवेश कर रहा है, जिसे प्रायः *NRLM 2.0* कहा जाता है, और यह आगामी पाँच वर्षीय चक्र (2026–27 से 2030–31) के लिए तैयार हो रहा है।

DAY NRLM के बारे में

- यह गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण का प्रमुख कार्यक्रम है, जिसे 2011 में ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा प्रारंभ किया गया था।
- इसका उद्देश्य ग्रामीण गरीबी को कम करना है, जिससे गरीब परिवारों, विशेषकर महिलाओं को सशक्त सामुदायिक संस्थाओं के माध्यम से सतत आजीविका तक पहुँच मिल सके।

DAY NRLM का मुख्य उद्देश्य

- DAY NRLM का केंद्रीय लक्ष्य ग्रामीण गरीब महिलाओं को *स्वयं सहायता समूहों (SHGs)* में संगठित करना और उनकी क्षमताओं का विकास करना है ताकि वे:
  - सुलभ ऋण प्राप्त कर सकें;
  - आजीविका गतिविधियाँ प्रारंभ और विस्तार कर सकें;

- आय और सामाजिक स्थिति में सुधार कर सकें;
- स्थानीय शासन और निर्णय-निर्माण में सक्रिय रूप से भाग ले सकें।

संस्थागत संरचना

- **स्वयं सहायता समूह (SHGs):** छोटे समूह (10–20 महिलाएँ) जो बचत, आंतरिक ऋण और सामूहिक कार्य को बढ़ावा देते हैं।
- **ग्राम संगठन (VOs):** गाँव स्तर पर SHGs का महासंघ, जो गतिविधियों का समन्वय करता है, समस्याओं का समाधान करता है और योजनाओं को लागू करता है।
- **क्लस्टर-स्तरीय महासंघ (CLFs):** उप-ब्लॉक स्तर पर औपचारिक रूप से पंजीकृत निकाय, जो आजीविका, वित्तीय सेवाएँ, सामाजिक कार्य और सरकारी कार्यक्रमों के अभिसरण का आधार होते हैं।

DAY NRLM का पैमाना और पहुँच

- DAY NRLM ने लगभग 10 करोड़ ग्रामीण परिवारों को 91 लाख SHGs में संगठित किया है, जिन्हें आगे 5.35 लाख VOs और 33,558 CLFs में संघटित किया गया है।
- इन SHGs ने ₹11 लाख करोड़ से अधिक बैंक ऋण का लाभ उठाया है, और लगभग 1.7% का अत्यंत कम NPA बनाए रखा है।
- आय पर प्रभाव भी उल्लेखनीय है, जहाँ 'लखपति दीदी' (वार्षिक ₹1 लाख से अधिक कमाने वाली महिलाएँ) की संख्या दो करोड़ से अधिक हो गई है।

प्रमुख हस्तक्षेप: DAY NRLM क्यों महत्वपूर्ण है?

- **राजनीतिक और सामाजिक सशक्तिकरण:** कई राज्यों ने अब बिना शर्त *प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT)* योजनाओं को सीधे महिलाओं तक पहुँचाना शुरू किया है, जैसे *लाड़ली लक्ष्मी (मध्य प्रदेश)*, *मइया सम्मान (झारखंड)*, *लड़की बहिन (महाराष्ट्र)*, और हाल ही में *मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना* के अंतर्गत बिहार में एक करोड़ से अधिक महिलाओं को ₹10,000 का हस्तांतरण।
- **वित्तीय समावेशन:** SHG–बैंक लिंकिंग, घूर्णन निधि, सामुदायिक निवेश निधि।
- **आजीविका संवर्धन:** कृषि और गैर-कृषि उद्यम, पशुपालन, मत्स्य पालन, खाद्य प्रसंस्करण, सेवाएँ।
- **कौशल विकास:** क्षमता निर्माण, उद्यमिता प्रशिक्षण, व्यवसाय योजना।
- **सामाजिक सशक्तिकरण:** नेतृत्व विकास, लैंगिक समानता, स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा।
- **अभिसरण:** कृषि, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के साथ संरेखण।
- **क्लस्टर-स्तरीय महासंघ:** *कुडुम्बश्री (केरल)* और *जीविका (बिहार)* जैसे सफल मॉडल अन्य राज्यों के लिए अनुकरणीय पाठ प्रस्तुत करते हैं।

आगे की राह

- DAY NRLM एक सामुदायिक-नेतृत्व वाला विकास मॉडल है। महिलाओं को केंद्र में रखकर इसने:
  - ग्रामीण परिवारों को निर्वाह से उद्यमिता की ओर स्थानांतरित किया;
  - जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को सुदृढ़ किया;
  - वित्तीय रूप से विश्वसनीय सामुदायिक संस्थाएँ निर्मित कीं;
  - महिलाओं के समूहों में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण और नीतिगत विश्वास को सक्षम बनाया।
- जैसे ही कार्यक्रम अपने अगले मूल्यांकन चक्र (2026–31) में प्रवेश करता है, ध्यान केंद्रित होगा:
  - अधिक सशक्त और स्वायत्त CLFs पर;
  - उच्च-स्तरीय उद्यमिता और वित्तीय विस्तार पर;
  - SHG उत्पादों के लिए बेहतर बाजार पहुँच और ब्रांडिंग पर;
  - गहन संस्थागत अभिसरण और पेशेवर सहयोग पर।
- DAY NRLM विश्व की सबसे बड़ी और प्रभावशाली महिला-नेतृत्व वाली विकास पहलों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें भारत में ग्रामीण आजीविका को पुनर्परिभाषित करने की क्षमता है।

- DAY NRLM को केवल ऋण वित्तपोषण से आगे बढ़ना होगा। इक्विटी, वेंचर कैपिटल और मिश्रित वित्त मॉडल का अन्वेषण *SIDBI, NBFCs, नियो-बैंकों* और अन्य वित्तीय संस्थानों के साथ साझेदारी के माध्यम से किया जाना आवश्यक है।

स्रोत: TH

2026 दिल्ली घोषणा-पत्र

संदर्भ

- भारत ने *अरब राज्यों के संगठन (League of Arab States – AL)* के 22 सदस्य देशों की मेज़बानी की, भारत–अरब विदेश मंत्रियों की दूसरी बैठक के लिए, जो प्रथम बार 10 वर्ष पूर्व बहरीन में आयोजित हुई थी।

परिचय

- यह बैठक ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव, सऊदी अरब एवं संयुक्त अरब अमीरात (UAE) के बीच बढ़ते अंतर, तथा *अमेरिका-नेतृत्व वाले बोर्ड ऑफ पीस* द्वारा इज़राइल–फिलिस्तीन प्रश्न के समाधान हेतु नए दृष्टिकोण के प्रयासों के बीच आयोजित हुई।
- भारत और अरब लीग ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया, जिसे *दिल्ली घोषणा-पत्र* कहा गया, जिसमें अनेक मुद्दों पर अपनी स्थिति स्पष्ट की गई और सहयोग बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई।
- फोरम की तीसरी भारत–अरब मंत्रीस्तरीय बैठक वर्ष 2028 में किसी अरब देश में आयोजित की जाएगी।

भारत–अरब लीग सहभागिता

- *अरब लीग*, जिसे आधिकारिक रूप से *लीग ऑफ अरब स्टेट्स* कहा जाता है, 1945 में काहिरा में सात सदस्य देशों के साथ स्थापित हुई थी।
  - वर्तमान में इसके 22 सदस्य देश हैं।
- भारत–अरब विदेश मंत्रियों की बैठक, भारत की अरब लीग के साथ सहभागिता का सर्वोच्च संस्थागत तंत्र है।
- संवाद प्रक्रिया को 2002 में भारत और अरब राज्यों के संगठन के बीच *समझौता ज्ञापन (MoU)* के माध्यम से संस्थागत किया गया, ताकि परामर्श हेतु नियमित ढाँचा स्थापित हो सके।
- 2008 में *सहयोग ज्ञापन* के माध्यम से संबंध और सुदृढ़ हुए, जिससे *अरब–भारत सहयोग फोरम (AICF)* की स्थापना हुई।
  - 2013 में सहयोग ढाँचे को पुनरीक्षित किया गया, ताकि इसकी संरचना सुव्यवस्थित हो और प्रभावशीलता बढ़े।
- भारत को अरब लीग में *पर्यवेक्षक दर्जा* प्राप्त है, जो पश्चिम एशिया और उत्तर अफ्रीका के देशों का प्रतिनिधित्व करती है।

दिल्ली घोषणा-पत्र की प्रमुख विशेषताएँ

- दिल्ली घोषणा-पत्र ने सूडान, लीबिया और सोमालिया की संप्रभुता, एकता और क्षेत्रीय अखंडता के समर्थन को दोहराया तथा बाहरी हस्तक्षेप को अस्वीकार किया, जो अप्रत्यक्ष रूप से अरब जगत के अंदर की दरारों को दर्शाता है।
- **सूडान:** UAE पर *रैपिड सपोर्ट फोर्सेज (RSF)* का समर्थन करने का आरोप है, जिसने 2023 से सूडानी राज्य से संघर्ष किया और 2025 में समानांतर सरकार बनाई। घोषणा-पत्र सूडान के साथ खड़ा है और नागरिकों पर अत्याचार की निंदा करता है।
- **सोमालिया:** केवल इज़राइल ने *सोमालिलैंड* को मान्यता दी है; UAE द्वारा 2025 में सोमालिलैंड पासपोर्ट की मान्यता अरब लीग की सहमति से अलग है। भारत ने मान्यता को दृढ़ता से अस्वीकार किया और सोमालिया की क्षेत्रीय अखंडता का समर्थन किया।
- **यमन:** भारत और अरब लीग ने लाल सागर में हूती हमलों की स्पष्ट निंदा की, जो 2023 के बाद भारत की पूर्व अप्रत्यक्ष भाषा से एक बदलाव है।
  - यमन की एकता का समर्थन सऊदी अरब की उन कार्रवाइयों के अनुरूप है, जो UAE-समर्थित *सदर्न ट्रांजिशनल काउंसिल* के विरुद्ध हैं।

पश्चिम एशिया में भारत की नीतिगत प्राथमिकताएँ

- **संप्रभुता और अंतर्राष्ट्रीय वैधता की प्रधानता:** सूडान, लीबिया, सोमालिया और यमन में संप्रभुता, एकता एवं क्षेत्रीय अखंडता पर भारत का जोर उसके

लंबे समय से चले आ रहे पृथकतावाद तथा समानांतर सरकारों के विरोधी रुख के अनुरूप है।

- यह भारत की अपनी चिंताओं को भी सुदृढ़ करता है, जो क्षेत्रीय अखंडता और बाहरी समर्थन प्राप्त गैर-राज्यीय तत्वों के अस्वीकार से जुड़ी हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सरकारों का समर्थन भारत को अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुरूप बनाए रखता है, बिना सैन्य गुटों में उलझे।

- **सऊदी-नेतृत्व वाले व्यवस्था की ओर संकेत:** घोषणा-पत्र यमन की एकता, लीबिया में मेल-मिलाप केंद्रित दृष्टिकोण, और RSF मिलिशिया के विरुद्ध सूडानी राज्य के समर्थन जैसे मुद्दों पर सऊदी अरब की स्थिति से सूक्ष्म रूप से सामंजस्यशील है।
  - यह भारत की उस गणना को दर्शाता है कि ऊर्जा सुरक्षा, भारतीय प्रवासी कल्याण और खाड़ी आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता के लिए सऊदी अरब प्रणालीगत रूप से अधिक महत्वपूर्ण है।
- **UAE का प्रबंधन, टकराव नहीं:** सूडान, लीबिया और सोमालिलैंड जैसे मुद्दों पर मतभेदों के बावजूद भारत ने UAE का नाम लेकर आलोचना करने से बचाव किया।
  - UAE भारत का प्रमुख आर्थिक और लॉजिस्टिक साझेदार है (CEPA, I2U2, IMEC)।
  - भारत का दृष्टिकोण संकेत देता है कि यह मुद्दा-आधारित असहमति है, न कि रणनीतिक विघटन, जिससे कार्यात्मक सहयोग सुरक्षित रहता है।
- घोषणा-पत्र में ईरान के आसपास अमेरिकी सैन्य उपस्थिति का कोई उल्लेख नहीं किया गया। यह मौन भारत को ईरान, अरब देशों और अमेरिका के साथ एक साथ संबंध बनाए रखने की अनुमति देता है।
- **खंडित होते पश्चिम एशिया में रणनीतिक स्वायत्तता:** भारत की स्थितियाँ सामूहिक रूप से दर्शाती हैं:
  - अमेरिका–इज़राइल दृष्टिकोण से स्वायत्तता, यद्यपि दोनों के साथ सहयोग जारी है।
  - अरब शक्ति प्रतिद्वंद्विताओं में वैचारिक उलझाव से परहेज़।
  - क्रांतिकारी या मिलिशिया-प्रेरित परिवर्तन के बजाय यथास्थिति स्थिरता को प्राथमिकता।

निष्कर्ष

- दिल्ली घोषणा-पत्र दर्शाता है कि भारत पश्चिम एशिया में *यथास्थिति शक्ति* के रूप में कार्य कर रहा है, संप्रभुता, स्थिरता और समुद्री सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए, प्रतिद्वंद्वी क्षेत्रीय गुटों के बीच सावधानीपूर्वक संतुलन बनाए रखता है, बिना किसी प्रत्यक्ष संरेखण के।

स्रोत: IE

बजट 2026: सरकार द्वारा ऑरेंज अर्थव्यवस्था को समर्थन

समाचारों में

- संघीय बजट 2026–27, जिसे वित्त मंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया, ने भारत के *रचनात्मक उद्योगों* को सेवाओं-आधारित विकास रणनीति के केंद्र में रखा, जो *ऑरेंज अर्थव्यवस्था* की ओर स्पष्ट नीतिगत प्रोत्साहन को दर्शाता है।

ऑरेंज अर्थव्यवस्था क्या है?

- *ऑरेंज अर्थव्यवस्था*, जिसे *क्रिएटिव इकॉनमी* भी कहा जाता है, एक ज्ञान-आधारित क्षेत्र है जहाँ उत्पादों और सेवाओं का मूल्य विचारों, सांस्कृतिक पूँजी एवं *बौद्धिक संपदा (IP)* से प्राप्त होता है, न कि केवल भौतिक वस्तुओं से।
- इस शब्द को *इवान ड्यूक मार्केज़* (पूर्व कोलंबियाई राष्ट्रपति) और *फेलिपे बुइट्रागो* ने अपनी 2013 की पुस्तक द *ऑरेंज इकॉनमी: एन इन्फिनिट अपॉर्च्युनिटी* में प्रस्तुत किया।
- ऑरेंज रंग को चुना गया क्योंकि यह ऐतिहासिक रूप से संस्कृति, रचनात्मकता और पहचान से जुड़ा रहा है।
- वैश्विक स्तर पर यह क्षेत्र प्रतिवर्ष $2 ट्रिलियन से अधिक का उत्पादन करता है और लगभग 5 करोड़ रोजगार प्रदान करता है।

बजट 2026–27 की प्रमुख घोषणाएँ

- **कॉन्टेंट क्रिएटर लैब्स:** देशभर के 15,000 माध्यमिक विद्यालयों और 500 महाविद्यालयों में *AVGC (एनीमेशन, विज़ुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स)* लैब्स की स्थापना।
- **संस्थागत समर्थन:** इन लैब्स का नेतृत्व *भारतीय रचनात्मक प्रौद्योगिकी संस्थान (IICT), मुंबई* द्वारा किया जाएगा, जिसे IITs और IIMs के मॉडल पर विकसित किया गया है।
- **वित्तीय प्रावधान:** AVGC क्षेत्र में प्रतिभा विकास हेतु ₹250 करोड़ का विशेष अनुदान निर्धारित किया गया है।
- **नया राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान (NID):** भारत के पूर्वी क्षेत्र में एक नया NID "चैलेंज रूट" के माध्यम से स्थापित किया जाएगा, ताकि पेशेवर डिज़ाइनरों की कमी को दूर किया जा सके।

भारत के लिए ऑरेंज अर्थव्यवस्था का महत्व

- *आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26* के अनुसार, भारत का मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र 2024 में लगभग ₹2.5 ट्रिलियन मूल्य का था।
  - **रोज़गार इंजन:** यह क्षेत्र भारत की कार्यशील जनसंख्या के लगभग 8% को रोजगार देता है और युवाओं एवं महिलाओं के लिए नौकरियों का प्रमुख स्रोत है।
  - **सॉफ्ट पावर:** रचनात्मक अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने से भारत की "सॉफ्ट पावर" बढ़ती है, क्योंकि यह मौलिक भारतीय IP एवं सांस्कृतिक सामग्री का वैश्विक निर्यात करता है।
  - **आर्थिक योगदान:** भारत के रचनात्मक निर्यात 2023–24 में 20% बढ़े, जिससे $11 अरब से अधिक की आय हुई।
  - **प्रतिभा का लोकतंत्रीकरण:** कॉन्टेंट क्रिएटर लैब्स का उद्देश्य उच्च-स्तरीय रचनात्मक उपकरणों की पहुँच को बड़े महानगरों से आगे बढ़ाकर अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों तक विस्तारित करना है।
- भारत के पास संरचनात्मक लाभ हैं जैसे युवा जनसंख्या, बढ़ता शहरीकरण, बढ़ती विवेकाधीन आय और तीव्र डिजिटल अपनापन।

स्रोत: TOI

संक्षिप्त समाचार

ज्ञान भारतम्

समाचारों में

- ज्ञान भारतम् के अंतर्गत 7.5 लाख से अधिक पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण किया गया है, जिनमें से 1.29 लाख पांडुलिपियाँ *ज्ञान भारतम् पोर्टल* पर उपलब्ध हैं।

ज्ञान भारतम्

- इसे संघीय बजट 2025–26 के दौरान घोषित किया गया था और यह भारत सरकार के *संस्कृति मंत्रालय (MoC)* की प्रमुख पहल है।
- इसका उद्देश्य भारत की विशाल पांडुलिपि धरोहर को उजागर करना, सुरक्षित रखना और संरक्षित करना है।
- यह *विकसित भारत 2047* की राष्ट्रीय दृष्टि के अनुरूप है और सांस्कृतिक संरक्षण को मानव पूँजी विकास के साथ समन्वित करने का प्रयास करता है, ताकि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहे।

विशेषताएँ

- यह पाँच प्रमुख स्तंभों पर केंद्रित है:
  - (i) सर्वेक्षण और सूचीकरण
  - (ii) संरक्षण और क्षमता निर्माण
  - (iii) प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण
  - (iv) भाषाविज्ञान और अनुवाद
  - (v) अनुसंधान, प्रकाशन और जनसंपर्क
- इसे देशभर में *क्लस्टर केंद्र (CCs)* और *स्वतंत्र केंद्र (ICs)* का नेटवर्क स्थापित करने का दायित्व दिया गया है।

स्रोत: PIB

राष्ट्रीय एकीकरण परिषद

संदर्भ

- हाल ही में राज्यसभा में शून्यकाल के दौरान *राष्ट्रीय एकीकरण परिषद* के पुनर्जीवन की माँग उठाई गई।

राष्ट्रीय एकीकरण परिषद

- प्रधानमंत्री *जवाहरलाल नेहरू* ने 1961 में *राष्ट्रीय एकीकरण सम्मेलन* का आयोजन किया था।
- **उद्देश्य:** राष्ट्रीय एकीकरण, सांप्रदायिक सद्भाव, विविधता में एकता को बढ़ावा देना और उन मुद्दों का समाधान करना जो देश की सामाजिक एकजुटता को खतरे में डालते हैं।
- **संरचना:** इसमें संघीय मंत्री, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री, प्रमुख राजनीतिक दलों के नेता, प्रतिष्ठित जन-प्रतिनिधि, विचारक एवं नागरिक समाज के प्रतिनिधि शामिल होते हैं।
- **मुख्य कार्य:**
  - सांप्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, अलगाववाद और उग्रवाद से निपटने के उपायों पर चर्चा और सिफारिशें करना।
  - सरकार को संवैधानिक मूल्यों, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक सद्भाव को सुदृढ़ करने वाली नीतियों पर परामर्श देना।
  - संवेदनशील राष्ट्रीय मुद्दों पर सहमति निर्माण के लिए मंच के रूप में कार्य करना।
- **स्वरूप:** यह एक *परामर्शदात्री निकाय* है (न तो वैधानिक, न ही संवैधानिक)। इसकी सिफारिशें बाध्यकारी नहीं होतीं।
- **बैठकें:** नियमित रूप से नहीं होतीं; राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुसार आवश्यकता पड़ने पर बुलाई जाती हैं।
  - *राष्ट्रीय एकीकरण परिषद* की बैठक 2013 के बाद से नहीं हुई है।

स्रोत: IE

भारत–विस्तार(VISTAAR)

संदर्भ

- संघीय बजट 2026–27 में 'भारत–विस्तार' (*कृषि संसाधनों तक पहुँच हेतु आभासी एकीकृत प्रणाली*) का प्रस्ताव किया गया है।

परिचय

- यह एक बहुभाषी *AI उपकरण* है, जिसका उद्देश्य किसानों को उनकी अपनी भाषा में फसल योजना, कृषि पद्धतियाँ और कीट प्रबंधन, मौसम पूर्वानुमान, बाजार, योजनाओं की जानकारी, पात्रता, आवेदन एवं शिकायत निवारण संबंधी जानकारी प्रदान करना है।
- भारत–विस्तार का प्रथम संस्करण हिंदी और अंग्रेज़ी में लॉन्च किया जाएगा तथा धीरे-धीरे यह क्षेत्रीय भाषाओं में भी उत्तर देने में सक्षम होगा।
- यह *AgriStack पोर्टल्स* और *भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)* के कृषि पद्धतियों संबंधी पैकेज को AI प्रणालियों के साथ एकीकृत करेगा।
- इससे कृषि उत्पादकता में वृद्धि होगी, किसानों को बेहतर निर्णय लेने में सहायता मिलेगी और अनुकूलित परामर्श समर्थन के माध्यम से जोखिम कम होगा।
- वित्त मंत्री ने भारत–विस्तार के लिए आगामी वित्तीय वर्ष (2026–27) हेतु ₹150 करोड़ का प्रावधान किया है।

स्रोत: PIB

सेल्फॉस विषाक्तता

समाचारों में

- *पोस्टग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (PGIMER), चंडीगढ़* के चिकित्सकों ने *एल्युमिनियम फॉस्फाइड (सेल्फोस)* विषाक्तता के उपचार में एक महत्वपूर्ण सफलता की रिपोर्ट दी है।

सेल्फॉस (एल्युमिनियम फॉस्फाइड)

- यह एक व्यापक रूप से प्रयुक्त लेकिन अत्यधिक विषैला *फ्यूमिगेंट कीटनाशक* है, जिसका उपयोग कृषि प्रधान देशों में अनाज भंडारण हेतु किया जाता है। इसे *सेल्फोस* या *राइस टैबलेट्स* के रूप में बेचा जाता है।

- भारत में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, सेल्फॉस विषाक्तता सामान्य है और इसमें उच्च मृत्यु दर होती है। इसके लक्षण खुराक और सेवन के समय पर निर्भर करते हैं।
- इसका कोई विशिष्ट प्रतिविष उपलब्ध नहीं है, इसलिए उपचार गहन निगरानी और सहायक देखभाल पर आधारित होता है।
- गंभीर मामलों में बहु-प्रणाली और बहु-अंग विफलता शामिल होती है, जबकि रक्त संबंधी जटिलताएँ दुर्लभ होती हैं।

स्रोत: TH

बॉन्ड यील्ड्स

समाचारों में

- संघीय बजट 2026, जिसमें FY27 के लिए अभूतपूर्व सकल उधारी योजना की घोषणा की गई थी, के बाद भारत सरकार के 10-वर्षीय बॉन्ड्स की यील्ड्स तीव्रता से बढ़ीं और एक वर्ष के उच्चतम स्तर पर पहुँच गईं।

बॉन्ड क्या है?

- बॉन्ड एक ऋण साधन है जिसे सरकार या कंपनियाँ धन एकत्रित करने के लिए जारी करती हैं।
- जारीकर्ता नियमित ब्याज भुगतान (कूपन) और परिपक्वता पर मूलधन की वापसी का वादा करता है।
- भारत में सरकारी बॉन्ड्स भारत सरकार द्वारा जारी किए जाते हैं और *भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)* द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं।

बॉन्ड यील्ड क्या है?

- बॉन्ड यील्ड वह वास्तविक प्रतिफल है जो निवेशक को बॉन्ड पर प्राप्त होता है।
- यह ब्याज भुगतान, बाज़ार में बॉन्ड की कीमत और परिपक्वता तक शेष समय को दर्शाता है।

उच्च यील्ड्स के प्रभाव

- कम निश्चित कूपन वाले मौजूदा बॉन्ड्स का बाज़ार मूल्य घटता है।
- कॉर्पोरेट/सरकारी उधारी लागत बढ़ती है, जिससे पूँजीगत व्यय धीमा हो सकता है और निजी निवेश प्रभावित हो सकता है।
- यह बाज़ार की मुद्रास्फीति और RBI दर वृद्धि की अपेक्षाओं का संकेत देता है, जो इक्विटी मूल्यांकन और रुपये की स्थिरता को प्रभावित करता है।

स्रोत: TH

गोबरधन योजना (GOBARdhan Scheme)

समाचारों में

- *गोबरधन योजना* ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है, रोजगार के अवसर सृजित कर रही है, किसानों की आय बढ़ा रही है, खाद और जैव-ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला विकसित कर रही है तथा ग्रामीण अवसंरचना विकास को समर्थन दे रही है।

गोबरधन योजना

- *गोबरधन-1* (गैल्वनाइजिंग ऑर्गेनिक बायो-एग्रो रिसोर्सेज-धन) को भारत सरकार ने अप्रैल 2018 में *स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) (SMB-G)* के अंतर्गत *जैव-अपघटनीय अपशिष्ट प्रबंधन* घटक के हिस्से के रूप में प्रारंभ किया।
- इसका उद्देश्य गाँवों की स्वच्छता पर सकारात्मक प्रभाव डालना और पशु एवं जैविक अपशिष्ट से धन और ऊर्जा उत्पन्न करना है।
  - गोबरधन का मुख्य ध्यान गाँवों को स्वच्छ रखना, ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाना और पशु अपशिष्ट से ऊर्जा एवं जैविक खाद उत्पन्न करना है।

स्रोत: PIB

सामान्य सापेक्षता का सिद्धांत

समाचारों में

- हाल ही में शोधकर्ताओं ने रिपोर्ट किया कि उन्होंने 'सबसे प्रबल' गुरुत्वाकर्षण तरंग का उपयोग करके *अल्बर्ट आइंस्टीन* के *सामान्य सापेक्षता सिद्धांत* और ब्लैक होल्स की प्रकृति का अब तक का सबसे कठोर परीक्षण किया।

सामान्य सापेक्षता का सिद्धांत

- *सामान्य सापेक्षता सिद्धांत (1915)* अल्बर्ट आइंस्टीन द्वारा प्रस्तावित किया गया था, जिसने उनके *विशेष सापेक्षता सिद्धांत (1905)* का विस्तार किया।
- यह गुरुत्वाकर्षण को एक बल के रूप में नहीं, बल्कि द्रव्यमान और ऊर्जा द्वारा उत्पन्न *अंतरिक्ष-समय की वक्रता* के रूप में समझाता है।
- सिद्धांत के अनुसार, विशाल वस्तुएँ अंतरिक्ष और समय को विकृत करती हैं, और जितना अधिक द्रव्यमान होता है, उतनी ही अधिक वक्रता होती है।
- गुरुत्वीय प्रभाव प्रकाश की गति से प्रसारित होते हैं, जिससे गुरुत्वाकर्षण को एक गतिशील घटना के रूप में स्थापित किया जाता है, न कि तात्कालिक।

स्रोत: TH

NEXT IAS